डॉ0 मानस मणि तिवारी,
अर्थशास्त्र विभाग,
श्री जयनारायण मिश्र पीजी कॉलेज, लखनऊ।
बी 0 ए 0,सेमेस्टर चतुर्थ , अर्थशास्त्र -द्वितीय प्रश्न पत्र,
अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

अंतरराष्ट्रीय विकास संघ (IDA)

'अंतरराष्ट्रीय विकास संघ' विश्व बैंक की एक अनुषंगी संस्था है। इसे विश्व बैंक की 'रियायती ऋण देने वाली खिड़की' अर्थात् 'उदार ऋण-खिड़की' भी कहते हैं। विश्व बैंक का अध्यक्ष ही इसका अध्यक्ष होता हैं। इसकी स्थापना आर्थिक विकास को पवर्तित करने, उत्पादकता की वृद्धि तथा इस प्रकार विश्व के अविकसित क्षेत्रों में जीवन निर्वाह के स्तर को उन्नत करने के उद्देश्य से हुई। विकास परिषद द्वारा दिए गए ऋण उदार कहे जा सकते हैं क्योंकि इनकी अवधि बहुत ही लंबी तथा ब्याज की दर बहुत ही कम है। विकास परिषद ने ऐसे ऋण दिए हैं जिनका भुगतान 40 वर्ष की अवधि में किया जाएगा। तथा जिन पर सेवा लागत 0.75% वार्षिक है। ब्याज दर जीरो होती है। ऐसे ऋण के भुगतान के समय में10 से 12 वर्ष की छूट अवधि है।

स्थापना - 24 सितम्बर, 1960

मुख्यालय - वाशिंगटन डीसी

सदस्य संख्या - 172 (2013 के अनुसार)

उद्देश्य-अंतरराष्ट्रीय विकास संघ का मुख्य उद्देश्य - विश्व के दरिद्रतम देशों को गरीबी हटाने के लिए सहायता प्रदान करना है, आर्थिक विकास के लिए ऐसे देशों को रियायती सहायता देना जिससे लोगों का जीवन स्तर ऊंचा हो इनका संबंध जनसंख्या नियंत्रण ,शिक्षा ,स्वास्थ्य सेवाओं, पोषण आहार से है !

सदस्यता -आई.डी.ए की सदस्यता विश्व बैंक के सभी सदस्यों के लिए खुली है। केवल विश्व बैंक के सदस्य इसके सदस्य बन सकते हैं। यदि कोई देश विश्व बैंक की सदस्यता से हट जाता है तो उसकी परिषद की सदस्यता भी अपने आप समाप्त हो जाती है। विकास संघ के समझौतों की धाराओं के अनुसार सदस्यों को दो भागों में बांटा गया है। भाग 1 में विकसित देश और भाग 2 में विकासशील देश आते हैं। विश्व बैंक में भारत का एक एक्सएक्टिव डायरेक्टर होता है जिसका चुनाव बांग्लादेश ,भूटान ,भारत तथा श्रीलंका के बीच से होता है। बोर्ड ऑफ गवर्नर्स सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था होती है। भारत के संबंध में वित्त मंत्री बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की सदस्य होता है।

संगठन - आई.डी.ए का संगठन विश्व बैंक की तरह है। कुछ एक विभागों और को छोड़कर इसका बाकी स्टाफ विश्व बैंक का ही है। विश्व बैंक के सभी उच्च अधिकारी इसके भी अधिकारी हैं और विश्व बैंक का अध्यक्ष इस परिषद का अध्यक्ष है। इसकी वार्षिक रिपोर्ट विश्व बैंक की रिपोर्ट का ही अंग होता है और दोनों को इकट्ठे ही पेश किया जाता है ।

भारत और आईडीए - अंतरराष्ट्रीय विकास परिषद के संस्थापक सदस्यों में से भारत है जो इससे बहुत विस्तृत आर्थिक सहायता प्राप्त कर रहा है। इस संस्था से ऊर्जा , उद्योग , आधारिक ढांचा, सिंचाई, सामाजिक सेवाओं , कृषि और ग्रामीण विकास, शहरी विकास ,संरचनात्मक समायोजनो आदि के लिए भारत ऋण प्राप्त कर रहा है। प्रारंभ से लेकर जून ,1998 तक भारत ने 224 ऐसे ऋण, जिनकी कुल राशि 25.5 बिलियन डालर थी। आई.डी.ए. प्राप्त किए थे। और 1998-99 के दौरान उसने 4 परियोजनाओं के लिए भारत को 654 मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता स्वीकृत किए , जिनमें सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे अधिक राशि 595 मिलियन डॉलर 595 थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा ,स्वास्थ्य ,बीमारियों की रोकथाम, पोषाहार और खाद्य सुरक्षा आते हैं। यह देश में प्रारंभ किए गए संरचनात्मक समायोजन प्रोग्रामों के संभावित बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए रखा गया है।

मूल्यांकन - पिछले 30 वर्षों से आई.डी.ए ने अल्पविकसित राष्ट्रों में गरीबी दूर करने हेतु विकास और गैर- विकास परियोजनाओं के लिए नरम करजो के रूप में अद्वितीय सहायता की है। इसके सहायता प्रयत्नों के फल स्वरुप दरिद्र राष्ट्रों में शिशु मृत्यु - दर पहले से आधी रह गई है। औसत जीवन प्रत्याशा 13% बढ़ गई है। और प्रौढ़ शिक्षा दर बढ़कर 60% हो गई है।

इन उपलब्धियों के बावजूद आई. डी .ए वित्तीय कमियों के कारण दरिद्र राष्ट्रों की पूरी सहायता करने में सफल नहीं हुआ है। विकसित राष्ट्र , विशेषकर अमेरिका आई.डी.ए . को आपूर्तिया बढ़ाने में सदैव बाधक रहे हैं।

दरिद्र राष्ट्र, विकास, अल्पविकसित, गवर्नर्स।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र -एम एल झींगन।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था - मिश्रा एवं पुरी।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण तथा विश्लेषण - लाल एंड लाल।